# अमरत्व
## शिक्षक सहायक पुस्तिका–8

## पाठ 1. वीणावादिनी वर दे

- **पाठ उद्देश्य**–सरस्वती माता से वरदान प्राप्त करने के लिए प्रार्थना कराना।
- **पाठ सार**–कवि माँ सरस्वती से प्रार्थना करता है कि तुम हम भारतीयों को नई गति दो, नई लय, ताल और नए छंद दो, नई वाणी और बादल के समान गंभीर स्वरूप प्रदान करो। तुम आकाश में विचरण करने वाले नए-नए पक्षियों के समूह को नित्य नए-नए स्वर प्रदान करो।

### पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) कवि प्रार्थना करता है कि भारतीयों में स्वतंत्रता का अमृत के समान मंत्र प्रदान भर दो।

   (ख) अंधकार रूपी अज्ञानता के बंधनों को जड़ से समाप्त कर दो।

   (ग) ज्ञान रूपी निर्झर का प्रकाश भर दो।

   (घ) नए नभ का तात्पर्य है–नया आसमान जिसमें नए पक्षियों के नए स्वर गूँजें।

2. (क) कवि कहता है कि तुम भारतीयों में स्वतंत्रता का नया अमृत मंत्र भर दो।

   (ख) कवि प्राचीन युग से नए युग में प्रवेश करना चाहता है, जिसमें सब कुछ नया हो।

   (ग) पक्षियों के लिए नया आसमान और नए स्वर माँगे हैं।

3. वर-भर, स्तर-निर्झर, भर-कर, नव-मंद्ररव, स्वर-वर।

4. (क) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(ख) अंलकार-अनुप्रास

(ग) पक्षियों का समूह

(घ) माँ सरस्वती से

(ङ) प्रकाशमान।

5. शब्द भारत, गति, लय, ताल-छंद, जलद, नभ, विहग-वृंद, स्वर।

6. (क) स्वतंत्र, मंत्र (ख) अंध-उर

(ग) तम, प्रकाश (घ) वीणावादिनी।

7. (क) हृदय के अंधकारों के बंधनों को दूर करके उसमें प्रकाश के निर्झर प्रवाहित कर दो। गहन अंधकार को दूर करके प्रकाश भर दो। सकल संसार को जगमग-जगमग कर दो।

(ख) नई गति, नए लय, नई ताल, नए छंद, कंठों से निकलते नए स्वर, बादलों के गंभीर स्वर, नए आकाश में उड़ते नए पक्षियों के नए समूह, नए पंख और नए स्वर प्रदान करो।

## मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) मैं अपने जीवन के अज्ञानता के समस्त अंधकारों को दूर करके ज्ञान का प्रकाश माँगूँगा।

(ख) कवि ने मनुष्यों के मन से अज्ञानता और अंधविश्वास रूपी अंधकार को दूर करके नए प्रकाश की प्रार्थना की है।

# पाठ 2. नमक का दारोगा

- **पाठ उद्देश्य**-सत्य और ईमानदारी का मार्ग ही सच्चा मार्ग है, इससे अवगत कराना।
- **पाठ सार**–अंग्रेज़ी शासन का समय था। मुंशी वंशीधर शिक्षा पूर्ण करके नौकरी की तलाश में निकले तो उनके पिता ने समझाया कि नौकरी करते समय पद से अधिक ध्यान रिश्वत पर देना। उन्हें नमक विभाग में दारोगा की नौकरी मिल गई। एक रात वे नौकरी पर तैनात थे और सो रहे थे। अचानक नदी की आवाज़ के स्थान पर गाड़ियों की गड़गड़ाहट और मल्लाहों का शोर सुनाई दिया। उन्होंने वर्दी पहनी और तमंचा हाथ में लिया। पुल से गाड़ियाँ निकल रही थीं। वे गाड़ियाँ उस क्षेत्र के प्रतिष्ठित ज़मींदार अलोपीदीन की थीं। उनका दबदबा था। गाड़ियों में नमक था। मुंशी वंशीधर ने गाड़ियाँ रोकीं तो अलोपीदीन उनके पास आया। उसने वंशीधर को रिश्वत देनी चाही। वंशीधर ने रिश्वत न लेकर अलोपीदीन को गिरफ़्तार कर लिया। स्तब्ध अलोपीदीन ने वंशीधर को चालीस हज़ार तक रिश्वत देनी चाही। वे नहीं माने। सुबह पूरे नगर में आग की भाँति समाचार फैल गया। अलोपीदीन को हथकड़ियाँ लगाए अदालत ले जाया गया। वहाँ अलोपीदीन की बहुत चलती थी। मजिस्ट्रेट ने अलोपीदीन को रिहा कर दिया और मुंशी वंशीधर को चेतावनी दी। चारों ओर अलोपीदीन का स्वागत हुआ। एक सप्ताह बाद मुंशी वंशीधर को नौकरी से निकाल दिया गया। वे घर पहुँचे तो माता-पिता और पत्नी ने उन्हें बुरा-भला कहा। एक सप्ताह बाद उनके घर के सामने सज़ा-धजा रथ रुका। मुंशी वंशीधर के पिता स्वागत करने गए। वे अलोपीदीन को देखकर क्षमा माँगने लगे। पुत्र वंशीधर को कोसने लगे। तब अलोपीदीन ने वंशीधर से प्रार्थना करते हुए एक स्टांप-पेपर निकालकर उस पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा। उन्होंने वंशीधर को अपनी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त किया था। वंशीधर ने सकुचाते हुए हस्ताक्षर कर दिए।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) ईश्वर-प्रदत्त नमक को कहा गया है। जब इस पर प्रतिबंध लगाया गया तो इसे चोरी-छिपे लाकर बेचा जाने लगा।

   (ख) वंशीधर के पिता ने उन्हें पद से अधिक रिश्वत लेने पर ध्यान देने के लिए कहा।

   (ग) वंशीधर को गाड़ियों के चलने और मल्लाहों का शोर सुनाई दिया। उन्होंने देखा कि गाड़ियाँ पुल पार करके जा रही थीं।

2. (क) वंशीधर जब पं० अलोपीदीन को गिरफ़्तार करने लगे तो उन्होंने वंशीधर को चालीस हज़ार रुपयों की रिश्वत का प्रलोभन दिया। वंशीधर धन के सामने नहीं झुके। इस तरह धन के समक्ष धर्म विजयी हुआ।

   (ख) पं० अलोपीदीन का अपने धन पर अखंड विश्वास था। उनका कहना था कि स्वर्ग में भी लक्ष्मी अर्थात् धन का ही राज्य था।

   (ग) वंशीधर के पिता के अनुसार नौकरी का पद पीर का मज़ार होता है, जिस पर लोग रिश्वत रूपी चढावा चढ़ाते हैं।

3. (क) वंशीधर ने पं० अलोपीदीन का स्वागत उठकर स्वाभिमान से किया।

   (ख) वंशीधर ने सोचा कि अलोपीदीन उसको लज्जित करने और जलाने आए हैं।

   (ग) वंशीधर को पिता द्वारा अलोपीदीन की ठकुर सुहाती करना असह्य लगा।

   (घ) पंडित अलोपीदीन की बातें सुनकर वंशीधर के मन का मैल मिट गया।

4. (क) पंड़ित अलोपीदीन वंशीधर से

(ख) वंशीधर ने, अलोपीदीन से

(ग) पिता ने, वंशीधर से।

5. (क) आशीर्वाद (ख) हस्ताक्षर

(ग) सामर्थ्य (घ) स्वीकार

(ङ) इज्ज़त।

6. वंशीधर के पिता के अनुसार वेतन महीने में एक दिन मिलता है। यह पूर्णिमा के चाँद की भाँति होता है। जो कम होते-होते समाप्त हो जाता है। रिश्वत आमदनी का बहता झरना है। यह धन की प्यास बुझाता रहता है।

7. (क) वकीलों, ललचाता (ख) वात्सल्यपूर्ण

(ग) सद्भाव (घ) स्वीकार, हस्ताक्षर

(ङ) मालिक-मुख्तार।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) मुंशी वंशीधर द्वारा अलोपीदीन का प्रस्ताव स्वीकार करना एकदम उचित था क्योंकि अलोपीदीन का हृदय परिवर्तन हो चुका था। यदि मैं वंशीधर के स्थान पर होता तो यही करता।

(ख) विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

## पाठ 3. है नमन उनको

◆ **पाठ उद्देश्य**—राष्ट्र के लिए सर्वस्व अर्पित करने वालों के प्रति आभार प्रकट करवाना।

◆ **पाठ सार**—इस कविता में कवि उन्हें नमन करता है जिन्होंने अपने

शौर्य से इस शरीर को अमर कर दिया है। जो शहीद हो गए, उनके समक्ष हिमालय भी लघु हो गया था। हम भारतीयों ने सिकंदरों रूपी आक्रमणकारियों को परास्त कर दिया है। हम मातृभूमि पर शीश अर्पित करने में पारंगत हैं। हमारे समक्ष आँधियाँ-तूफ़ान भी हार गए हैं। विधाता ने हमारी वीरता के गीत लिखे हैं। उन युवाओं को नमन है जिन्होंने देशभक्ति के लिए यौवन अर्पित कर दिया है। जिनके बलिदानों से मृत्यु भी पवित्र हो गई है। तुम्हें नमन है, तुमने अपना सर्वस्व राष्ट्र के लिए अर्पित कर दिया है।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) शहीदों को और राष्ट्र को सर्वस्व अर्पित करने वालों को नमन करता है।

   (ख) कवि का कहने का अभिप्राय है, जो हमसे वही युद्ध करता है, जो मरना चाहता है।

   (ग) शहीदों के शौय की गाथाओं के समक्ष हिमालय भी तुच्छ प्रतीत होता है।

2. (क) बालक भरत ने सिंह को पराजित कर दिया था। भारतीय ऐसे वीर होते हैं जो सिंह के दाँत तक गिनने की सामर्थ्य रखते हैं।

   (ख) नचिकेता यमराज के पास गया था। उसने यमराज से प्रश्न पूछे थे। आज फिर वीर नचिकेता यमराज को चुनौती दे रहा है।

   (ग) यमराज से जूझने की कथा नचिकेता की है जो पिता की आज्ञा से यमराज के पास चला गया था और निडर होकर उसका सामना किया था।

3. सिंकदर, जिनका, धरा, नर्क, बुजुर्गों, सिंह, शीश, कला।

4. काल कौतुक, पानी-पानी।

5. राष्ट्र हित में शौर्य प्रदर्शन करने वालों का कार्य हिमालय से भी विशाल होता है। इस सदंर्भ में हिमालय को बौना कहा गया है।

6. अमरत्व–अमरता शीश–सिर
   अग्नि–आग प्रंभजन–तूफ़ान
   व्यथाओं–पीड़ाओं।

7. (क) भू-भूमि (ख) आग, अनल
   (ग) मित्र, दोस्त (घ) मातृ, जननी।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) कवि अपने भावनाओं की केवल अभिव्यक्ति शब्दों द्वारा करता है। सैनिक देश के लिए अपना बलिदान तक दे देते हैं। इस दृष्टि से कवि बलिदानियों के समक्ष कुछ भी नहीं है।

(ख) इस कविता का केंद्रीय भाव है–राष्ट्र के लिए बलिदान होना ही सर्वश्रेष्ठ कार्य है।

## पाठ 4. आशा का दीपक

- **पाठ उद्देश्य**–संकटों के मध्य सदा आशावान रहना चाहिए, इसे अवगत कराना।
- **पाठ सार**–यदि रात भर आशाओं का दीपक जलाएँ रखें तो अँधेरों से घबराना नहीं चाहिए क्योंकि सूर्य प्रतिदिन निकलता है। बादल सूर्य को रोक नहीं पाते। आँगन में सातों रंगों की किरणें आएँगी। पीड़ाओं को महत्व नहीं देना चाहिए। जो कष्टों को सहकर तपते हैं वे तुलसी के समान पूजे जाते हैं। हमें मान-सम्मान न मिले, हमें गमलों में फूलों की तरह न सजाया जाए, हम अपने उद्बोधन

गीतों से पीड़ाओं रूपी पर्वतों को गला देते हैं। अपनी पीड़ाएँ दूर करने के लिए किसी को मत बुलाओ क्योंकि सब संवेदनशील नहीं होते। लालचों में पड़कर अपने पथ से विचलित नहीं होना चाहिए। इस जीवन यात्रा में निश्चिंत होकर आगे बढ़ते चलो। कष्ट सहकर तपते रहो। रोने से पत्थर रूपी कष्ट दूर नहीं होते। इसलिए अँधेरों से मत घबराओ आशा रूपी सूर्य प्रतिदिन आता है।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) कवि के अनुसार निराशा रूपी अँधेरों को दूर करने के लिए प्रतिदिन सूर्य निकलता है। इसलिए आशा का दीपक जलाए रखना चाहिए।

   (ख) अँधेरा हमेशा नहीं रहता। सूर्य का प्रकाश उसे दूर कर देता है।

   (ग) कष्टों से घबराकर पराजय नहीं मान लेनी चाहिए। अपने द्वार खुले रखने चाहिएँ, जिनसे प्रसन्नताएँ पुनः लौट आएँगी।

   (घ) ज्योति कलश से तात्पर्य है सूर्य का प्रकाश।

2. (क) व्यक्ति कष्टपीड़ित होकर घबरा जाता है। कवि कहता है कि अपने कष्टों को मन में ही रखना चाहिए।

   (ख) भीड़ से तात्पर्य वे लोग हैं जिनसे कष्टों में सहायता की अपेक्षा होती है। कवि कहता है उन्हें सहायता के लिए नहीं बुलाना चाहिए क्योंकि वे कष्ट दूर करने नहीं आएँगे।

3. भरमाएगा–आएगा          रानी–पानी

   पलता–निकलता          मिले–खिले।

4. अनुप्रास अलंकार।

5. बादल, रवि-पथ, ज्योति-कलश, भोर रसवंती, सतवंती, तम, सूरज।

6. (क) अँधेरा, तिमिर (ख) सूर्य, सूरज

(ग) मेघ, जलद (घ) रात्रि, निशा

(ङ) होठ, ओंठ।

7. छाँव रूपी सुखों को प्राप्त करने के लिए कष्टों को हँसकर सहते रहो। कवि ने इस पंक्ति में यह कहना चाहा है।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) कविता का केंद्रीय भाव सदा आशावान बना रहना है। अँधेरों रूपी कष्टों की रातों के पश्चात् प्रकाश रूपी सूर्य अवश्य निकलता है। अपनी वाणी से तात्पर्य है, कवि का गीत सृजन करना। कवि कहता है हम तो अपने उद्बोधन गीतों द्वारा पर्वतों के समान अत्यधिक पीड़ाओं को भी दूर कर देते हैं।

(ख) समाज में सब लोग दूसरों के कष्ट दूर करने नहीं आते। वे संवेदनहीन होते हैं। कवि के इन विचारों से मैं सहमत हूँ।

## पाठ 5. पाज़ेब

- **पाठ उद्देश्य**—किसी पर बिना प्रमाण के दोषारोपण नहीं करना चाहिए, इसे समझाना।
- **पाठ सार**—मुन्नी के हठ करने पर उसके पिता उसे पाज़ेब दिलाने का आश्वासन देते हैं। उसकी बुआ ने कहा कि वह उसे पाज़ेब दिलाएगी। बुआ रविवार को आई तो मुन्नी के लिए पाज़ेब लाई। पाज़ेब पहनकर अपनी सखियों आदि को दिखाती रही। बुआ के जाने के पश्चात् पाज़ेब रख दी गई। लेखक की पत्नी ने पति से वैसी ही पाज़ेब बनवाने की फरमाइश की। पति ने सहमति दे दी।

रात हुई। पत्नी ने पति को बताया कि एक पाज़ेब तो मिल गई है दूसरी नहीं मिल रही है। पाज़ेब को ढूँढ़ा जाने लगा। पाज़ेब कहीं नहीं मिली। पति-पत्नी में बहस होने लगी। दोनों एक-दूसरे पर लापरवाही का दोषारोपण करने लगे। पत्नी ने कहा शायद नौकर बंसी ने न निकाल ली हो क्योंकि उस समय वह वहीं था। पति नौकर से पूछ चुका था। उसे पुत्र आशुतोष पर शक हुआ। पत्नी ने कहा कि वह तो उसके साथ पाज़ेब तलाशता रहा था। उसी शाम आशुतोष पतंग और डोर खरीदकर लाया था। उस पर संदेह गहरा गया। लेखक उससे बार-बार, कई तरह से पूछता रहा। बार-बार पूछे जाने पर आशुतोष मान गया कि उसने छुन्नू को पाज़ेब दी है। लेखक ने छुन्नू से पाज़ेब लाने के लिए कहा परंतु आशुतोष वहीं बैठा रहा। छुन्नू ने आकर आशुतोष से पूछा कि उसने उसे पाज़ेब कब दी थी? आशुतोष ने कहा तुम्हें दी थी। छुन्नू की माँ ने छुन्नू को खुब पीटा और रोने लगी। बात चारों ओर फैल गई। छुन्नू की माँ छुन्नू को लेकर आई तो छुन्नू ने कहा कि आशुतोष पतंग वाले को दे आया है। माँ ने उसे खूब पीटा। अगले दिन लेखक दफ़्तर से लौटा तो पत्नी ने बताया कि आशुतोष मान गया है कि उसने पतंग वाले को पाज़ेब ग्यारह आने में बेच दी है। लेखक बड़ी देर तक आशुतोष से पूछता रहा। वह चुप रहा तो लेखक ने उसे कमरे में बंद करवा दिया। लेखक उसे दुकानदार से पाज़ेब लाने के लिए बार-बार डाँट-फटकारकर कहता रहा। उसी समय बुआ आ गई। उसने लेखक को पाज़ेब देते हुए कहा कि गलती से एक पाज़ेब वह ले गई थी।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) बुआ मुन्नी के लिए पाज़ेब लाई थी।

   (ख) साइकिल के लिए ज़िद करने लगा।

(ग) नौकर पर संदेह हुआ।

(घ) पतंग उड़ाने का।

2. (क) पिता के बार-बार धमकाने के कारण आशुतोष ने चोरी करना मान लिया।

(ख) भय दिखाकर आशुतोष को चोरी स्वीकार करने के लिए।

(ग) आशुतोष उसी शाम पतंग और डोर लाया था।

3. (क) बंसी पर ✓ (ख) विश्वास ✓

(ग) आठ वर्ष ✓ (घ) केले और मिठाई ✓

(ङ) मुन्नी ✓

4. (क) पिता ने, आशुतोष से (ख)पत्नी ने, पति से

(ग) पिता ने, पुत्र से। (घ) पत्नी ने, पति से।

5. (क) जैनेंद्र कुमार (ख) पतंग उड़ाने का

(ग) साइकिल का (घ) मिठाई

(ङ) बुआ से।

6. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗

(घ) ✗ (ङ) ✓

7. (क) पाज़ेब (ख) इतवार

(ग) बाईसिकल (घ) उग्रता

(ङ) गिल्ली-डंडा।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) माता-पिता द्वारा आशुतोष के साथ किया गया व्यवहार अनुचित ही नहीं निंदनीय भी है। बिना किसी प्रमाण के उसे बहलाकर, डाँटकर, कमरे में बंद करके, पीटकर चोरी

करना स्वीकार कराना माता-पिता की अज्ञानता है।

(ख) अपराधी का हृदय-परिवर्तन उस पर अत्याचार करके नहीं किया जा सकता है। यह परिवर्तन प्रेम से ही संभव होता है।

## पाठ 6. राजा और कहानीकार

◆ **पाठ उद्देश्य**–स्वयं को सबसे चतुर नहीं समझना चाहिए, इससे अवगत कराना।

◆ **पाठ सार**–एक राजा को कहानियाँ सुनने का शौक था। उसने इतनी कहानियाँ सुन ली थीं कि उसे सभी कहानियों का पहले ही पता चल जाता था। उसने घोषणा कराई कि जो कहानीकार उसे कहानी सुनाने आएगा यदि उसने नई कहानी नहीं सुनाई तो उसे मृत्युदंड दिया जाएगा। डरकर जब कोई भी कहानीकार नहीं आया तो राजा ने नई घोषणा कराई कि नई कहानी सुनाने वाले को मुहँमाँगा इनाम दिया जाएगा। यह सुनकर कहानीकार विश्वजीत राजा के पास आया। उसने शर्त रखी कि राजा कहानी सुनते समय हूँ-हूँ करता रहेगा। राजा पूरी कहानी सुनकर ही उठेगा। यदि राजा सो गया तो वह दोबारा कहानी सुनाएगा। तब राजा को मुँहमाँगा इनाम देना पड़ेगा। राजा मान गया। विश्वजीत ने कहानी सुनाई। एक राजा ने अनाज रखने का विशाल गोदाम बनवाकर उसमें अन्न भर दिया। उसमें एक छेद रह गया। एक दिन एक चिड़िया उस छेद से अंदर गई और दाना चुगा। फिर तो चिड़ियाँ आतीं और दाना चुगतीं। पहली चिड़ियाँ आई। इस तरह विश्वजीत चिड़ियों की संख्या बताता। राजा ने कहा आगे सुनाओ। विश्वजीत ने कहा कि राज्य में लाखों चिड़ियाँ हैं। जब सारी चिड़ियाँ दाना चुग लेंगी तब आगे की कहानी सुनाऊँगा। राजा अपने जाल में फँस गया था। उसने विश्वजीत को स्वर्ण मुद्राएँ भेंट कीं।

**पाठ मूल्यांकन उत्तर**

1. (क) राजा बेतुके आदेश देने के लिए प्रसिद्ध था।
   (ख) राजा को नई-नई कहानियाँ सुनने का शौक था।
   (ग) उसे सभी कहानियों का पहले ही पता होता था, इसलिए उसने नई कहानियाँ सुनाने के लिए घोषणा करवाई।
   (घ) विश्वजीत चतुर कहानीकार था। वह राजा को कहानी सुनाने आया था।
2. (क) कहानीकार ने राजा को अनाज के गोदाम से अन्न के दाने चुनकर ले जाने वाली चिड़ियों की कहानी सुनाई।
   (ख) विश्वजीत ने कहानी के बीच में राजा द्वारा हूँ-हूँ करने और पूरी कहानी सुनकर उठने की शर्त रखी। इसमें राजा हार गया।
   (ग) इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि मूर्खता भरे काम नहीं करने चाहिएँ।
3. (क) हिम्मत (ख) मुनादी
   (ग) कहानियाँ (घ) परोपकारी
   (ङ) गोदाम
4. (क) मंत्रियों (ख) सुराख
   (ग) फुर्र (घ) मुद्राएँ
   (ङ) अभिवादन (च) नींद।
5. (क) राजा ने कहानियाँ सुनीं।
   (ख) राजदरबार में कहानीकार आया।
   (ग) विश्वजीत ने हिम्मत की।
   (ङ) राजा ने अनाज गोदाम बनवाया।

6. विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

7. प्रसिद्ध–अप्रसिद्ध | खुशी–दुखी
हँसी–रोना | पक्का–कच्चा
पुरानी–नई | निर्माण–ध्वंस।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) राजा ने नई कहानी न सुनाने पर मृत्युदंड देने की शर्त रखी थी। यह सर्वथा अनुचित था।

(ख) यह संभव है। कोई भी चतुर कहानीकार इसी प्रकार की कहानी सुना सकता था।

# पाठ 7. हॉकी का जादूगर

◆ **पाठ सार**–मेजर ध्यानचंद के जीवन के विषय में बताकर खेलों में रुचि जाग्रत कराना।

◆ **पाठ सार**–मेजर ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त 1905 को प्रयागराज में समेश्वर सिंह और श्रद्धा सिंह के घर हुआ था। सेना की नौकरी करते समय दिन में समय न मिलने के कारण वे रात को चाँद की रोशनी में हॉकी खेलने का अभ्यास करते थे। उनके कोच ने उन्हें ध्यानचंद्र नाम दिया जो ध्यानचंद के रूप में प्रसिद्ध हो गया। उनका वास्तविक नाम ध्यान सिंह था। एक बार मैच में उनकी टीम दो गोलों से हार रही थी। खेल समाप्त होने में चार मिनट शेष थे। उनके आफ़िसर ने ध्यानचंद को कुछ करने के लिए कहा। ध्यानचंद ने तीन गोल करके मैच जिता दिया। उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहा जाने लगा। सन् 1936 में जर्मनी में हिटलर की उपस्थिति में ध्यानचंद ने नंगे पैर खेलकर भारतीय टीम को विजय दिलाई। उन्होंने खेल-जीवन में चार सौ गोल किए। उन्हें 1956 में पद्म भूषण से अलंकृत किया गया। उनके नाम पर नई दिल्ली में

'मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम' है। उनके जन्म-दिन को खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) ध्यानचंद को कुश्ती खेलने का शौक था।

   (ख) हॉकी खेलने के कौशल और मैचों में गोल करने की अद्‍भुत प्रतिभा के कारण उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता है।

   (ग) ध्यानचंद का असली नाम ध्यान सिंह था। सेना में नौकरी करते हुए उन्हें दिन में हॉकी खेलने का समय नहीं मिलता था। वे रात को चाँद की रोशनी में हॉकी का अभ्यास करते थे। उनके कोच ने उन्हें ध्यानचंद्र नाम दे दिया जो ध्यानचंद बन गया।

2. विद्‍यार्थी स्वयं करेंगे।
3. भारतीय टीम ने हॉकी के खेल में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन किए थे। इसलिए इसे राष्ट्रीय खेल माना जाता है।
4. विद्‍यार्थी स्वयं करेंगे।
5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗

   (घ) ✗ (ङ) ✗

6. (क) छाँव ✓ (ख) मूर्ख ✓

   (ग) अनेक ✓ (घ) गरीब ✓

   (ङ) पुण्य ✓

7. (क) अनुज (ख) सहपाठी

   (ग) जंगली (घ) शाकाहारी

   (ङ) गायका।

8. **छक्के छुड़ाना**–बुरी तरह पराजित करना।

**मुँह में पानी आना**–जी ललचाना।

**हाथ-मलना**–पछताना।

**फूला न समाना**–बहुत प्रसन्न होना।

**कान भरना**–चुगली करना।

9. और 10 - विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

# पाठ 8. यह दीप अकेला

- **पाठ उद्देश्य**–समाज के विकास में सबको साथ लेकर चलना चाहिए, यह समझाना।
- **पाठ सार**–यह दीपक रूपी व्यक्ति स्नेह रूपी तेल से भरा है। इसे समाज की पंक्ति में शामिल कर लेना चाहिए, जिससे इसका जीवन सार्थक हो जाए। यह गीत रचता है जिसे और कोई नहीं रच सकता। यह गोताखोर की तरह पानी से मोती चुनकर लाता है। यह लकड़ी के समान जलकर परिवेश को पवित्र बनाता है। यह व्यक्ति शहद के समान है जिसे समय रूपी मधुमखियों ने संग्रहित किया है। यह दही और मक्खन के समान है, जिसे जीवन रूपी कामधेनु के दूध से बनाया गया है। यह सत्य से आँख मिला सकता है। यह प्रकृति से स्वयं उत्पन्न हुआ है। यह ईश्वर के समान है। यह अकेला है, इसे शक्ति देनी चाहिए। सृजनशील धैर्यवान होते हैं। वे स्वाभिमानी होते हैं। वे किसी के समक्ष नहीं झुकते। वे हार नहीं मानते। उनकी आँखों में प्रेम भरा रहता है। वह जिज्ञासु है। उसे समाज से जोड़ना चाहिए जिससे समाज आध्यात्मिक बना रहे।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) दीप अकेला है पर स्नेह से भरा है।

(ख) कवि का अभिप्राय है दीप को समाज में साथ लेकर चलना चाहिए।

(ग) दीप महत्वपूर्ण है, उसके योगदान से समाज का हित होगा इसलिए कवि उसे समाज के साथ संबद्ध करना चाहता है।

2. (क) दीप में समाज के प्रति स्नेह भावना है। उसे स्वयं पर गर्व है और अपने कार्यों में मस्त है। इसलिए कवि ने उसके संबंध में ऐसा कहा है।

(ख) गीत और मोती समाज के निर्माण में योगदान के प्रतीक हैं। कवि भावों में डूबकर मोती रूपी गीतों का सृजन करता है।

(ग) मनुष्य प्रकृति की सुंदरतम रचना है। मनुष्य धैर्यवान है, सृजनशील है, स्वाभिमानी है, उसमें विश्वास है। इसलिए मनुष्य अद्‌वितीय है।

3. स्वयं काल की, युगसंचय; गोरस, कामधेनु, पय; स्वयंभू; शक्ति।

4. दीपक सृजनशील, महत्वपूर्ण, स्वाभिमानी और समाजोपयोगी है। उसे समाज में स्थान देना समाज के हित में होगा।

5. (क) नयन, चक्षु (ख) सुधा, पीयूष

(ग) सूर्य, सूरज (घ) गौरव, अभिमान

6. (क) स्नेह भरा ✓ (ख) सागर मंथन से ✓

(ग) दीपकों की पंक्ति में ✓

(घ) कवि के व्यक्तित्व का ✓

7. गोताखोर समुद्र में डूबकर मोती लेकर आता है। इसी प्रकार कवि भावों में डूबकर गीतों का सृजन करता है। इस पंक्ति में यह भाव स्पष्ट किया गया है।

### मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) व्यक्ति समाज का अंग होता है और समाज व्यक्तियों से बनता है। इसलिए दोनों एक-दूसरे पर आश्रित होते हैं। कवि यही कहना चाहता है कि दीपक रूपी व्यक्ति को समाज में मिला लो।

(ख) दीपक अंधकार के विरुद्ध संघर्ष करके प्रकाश लाने का सभ्यता द्वारा विकसित माध्यम है। मनुष्य ने सभ्य होकर प्रकाश का उपयोग मानव हित में किया है, यह सांस्कृतिक उत्थान का प्रतीक है।

## पाठ 9. हकीकत का बलिदान

- **पाठ उद्देश्य**–वीर हकीकत राय के स्वधर्म की रक्षा के लिए बलिदान से अवगत कराकर स्वधर्म का महत्व बताना।
- **पाठ सार**–हकीकत राय काज़ी का निर्णय सुनकर बलिदान होने को तैयार हो गया। उसने माँ से कहा कि मुझे मत रोको, मैं धर्म पर बलिदान हो रहा हूँ। यह मेरा कर्तव्य है। मैं महाराणा प्रताप की संतान और अभिमन्यु का भाई हूँ। मेरे लहू से अनेक हकीकत जन्म लेंगे। यह कहकर धर्म की रक्षा के लिए हकीकत ने अपना बलिदान दे दिया।

### पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) लक्ष्मी देवी

   (ख) बंसत पंचमी के दिन

   (ग) अपने धर्म पर अडिग रहने के लिए

   (घ) फाँसी का हुक्म।

2. (क) माँ बिलख-बिलखकर रोने लगी थी।

(ख) हकीकत राय ने कहा कि वह धर्म की रक्षा के लिए अपना कर्तव्य निभा रहा है।

(ग) हकीकत राय ने कर्तव्य को चुना।

3. गर्जन, आँसुओं; बलिदान; मुझको; रग-रग; खून खौलता; खंजर; बुलाता।

4. (क) अपना (ख) संपत्ति

(ग) गरजना (घ) डरपोक

(ङ) बहादुर (च) फिर से।

5. (क) कर्ण (ख) ग्रीवा

(ग) शीर्ष (घ) कंपन

(ङ) अश्रु (च) पृष्ठ

6. हे माँ, मेरे खून से अनेक हकीकत राय जन्म लेंगे। वे बलिवेदी पर बार-बार अपना बलिदान करेंगे।

7. (क) धर्म के लिए कुर्बानी दी।

(ख) माँ का हृदय रो उठा।

(ग) इस शोणित से अनेक वीर हकीकत जन्म लेंगे।

(घ) मैं राणा की संतति हूँ।

(ङ) धर्म की रक्षा मेरा कर्तव्य है।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) यदि हकीकत राय इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेता तो उसे मृत्युदंड नहीं मिलता। स्वधर्म पर अडिग रहना व्यक्ति का कर्तव्य और अधिकार है। यह अपराध नहीं है।

(ख) हकीकत राय को अपने धर्म पर अभिमान था। इसलिए उसने काज़ी की इस्लाम धर्म स्वीकार करने की शर्त नहीं मानी। यदि मेरे साथ ऐसा होता तो मैं भी वही करता जो हकीकत राय ने किया था।

## पाठ 10. मेरे सपनों का भारत : महात्मा गाँधी

- **पाठ उद्देश्य**—महात्मा गाँधी की दृष्टि से भारत के विषय में अवगत कराना।
- **पाठ सार**—महात्मा गाँधी कहते हैं कि भारत कर्मभूमि है। यह योगभूमि नहीं है। भारत धर्म के क्षेत्र में संसार में सबसे बड़ा हो सकता है। भारत तलवार अर्थात् हिंसा की नीति से अस्थायी विजय पा सकता है। यह गर्व की बात नहीं है। मेरा जीवन अहिंसा के धर्म का पालन करना है। मैं भारत को स्वतंत्र और शक्तिशाली देखना चाहता हूँ। पाश्चात्य सभ्यता से मेरा विरोध विचारहीन और विवेकहीन नकल करना है। यूरोपीय सभ्यता उनके अनुकूल है, उसे अपनाकर भारत का नाश होगा। उसमें जो अच्छा है उसे ले लेना चाहिए। मैं ऐसे संविधान की रचना करवाऊँगा जो भारत को दासता और दूसरों पर आश्रित होने से मुक्त कर दे। ऊँच-नीच वर्ग में भेद नहीं होगा। अस्पृश्यता और शराब का स्थान नहीं होगा। पुरुष और स्त्रियों के समान अधिकार होंगे। सर्व धर्म समभाव होगा।

### पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) महात्मा गाँधी ने अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह आंदोलन चलाया। उन्होंने अहिंसा का मार्ग अपनाया। उनके नेतृत्व में हज़ारों भारतवासियों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष किया। उन्हें राष्ट्रपिता का सम्मान दिया गया।

(ख) भारतीय कर्म करने में विश्वास करते हैं। वे परिश्रमी हैं। वे भोगवादी नहीं हैं।

(ग) भारत का ध्येय यूरोपीय और अन्य देशों से भिन्न है। भारत धर्म प्रधान देश है। यहाँ हिंसा नहीं अहिंसा को महत्व दिया जाता है।

(घ) महात्मा गाँधी हिंसा की नीति के विरुद्ध थे। वे नहीं चाहते थे कि भारत तलवार की नीति अपनाए।

2. (क) यदि भारत ने हिंसा की नीति अपना ली तो गाँधी भारत में नहीं रहना चाहेंगे।

(ख) महात्मा गाँधी के अनुसार ज्ञान केवल पाश्चात्य देशों की बपौती नहीं है। हमें उनका अंधानुकरण नहीं करना चाहिए। मेरा भी यही विचार है कि हम भारतीयों के पास ज्ञान के भंडार हैं।

(ग) यूरोपीय देशों की सभ्यता उनके लिए अच्छी हो सकती है। हमारी सभ्यता अधिक प्राचीन और गौरवपूर्ण है। हमें उनकी सभ्यता को आँख मूदँकर नहीं मान लेना चाहिए।

4. (क) आकर्षित (ख) कर्मभूमि

(ग) आत्मशुद्धि (घ) शक्ति

(ङ) तलवार

5. (क) क्योंकि वे अहिंसा में विश्वास रखते थे।

(ख) गाँधी जी ने माँ और बालक का उदाहरण देकर बताया है कि वे उसी तरह भारत से बँधे हैं जैसे बालक माँ के साथ बँधा होता है।

(ग) यदि भारत ने हिंसा को अपना धर्म मान लिया तो महात्मा गाँधी की दशा अनाथ बालक जैसी हो जाएगी।

6. (क) अयोग्यता (ख) अधार्मिक
(ग) पूर्ण (घ) अनियंत्रित
(ङ) परतंत्रता

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) महात्मा गाँधी जातिगत भेदभाव को नहीं मानते थे। उनका सपना था कि स्वतंत्रता के पश्चात् के भारत में छुआछूत नहीं होगी और सभी धर्मों का आदर किया जाएगा।

(ख) विश्व में हिंसा का दौर चल रहा है। चारों ओर किसी न किसी कारणवश हिंसक घटनाएँ हो रही हैं। युद्ध हो रहे हैं।, आतंकवादी घटनाएँ हो रही हैं। आधुनिक संदर्भों में महात्मा गाँधी की प्रासंगिकता को स्वीकार करते हैं।

## पाठ 11. सवैये

◆ **पाठ उद्देश्य**—रसखान के कृष्ण भक्ति के सवैयों से अवगत कराना।

◆ **पाठ सार**—रसखान कहते हैं कि यदि उसका पुनर्जन्म मनुष्य के रूप में हुआ तो मैं गोकुल के ग्वालों में बसना चाहूँगा। यदि पशु हुआ तो नंद की गायों में चरना चाहूँगा। यदि पत्थर हुआ तो गोवर्धन का पत्थर बनूँगा। यदि पक्षी बना तो यमुना के किनारे कदंब की टहनियों में बसूँगा। इस लाठी और कंबल पर तीनों लोकों का राज्य त्याग दूँगा। नंद की गायें चराने के बदले यदि आठों सिद्धियाँ–नौ निधियाँ मिलें तो उन्हें त्याग दूँगा। वे अपनी आँखों से ब्रज के वन, बागों और तालाब को आजीवन निहारना चाहते हैं। वे व्रज की काँटेदार झाड़ियों के बदले सोने के सौ महल न्यौछावर करने को तैयार हैं।

कृष्ण गोपियों को इतना भाते हैं कि वे उनके लिए वे सारे स्वांग करने को तैयार हैं। गोपियाँ कहती हैं कि वे सिर पर मोरपंख रखेंगी, गुंजों की माला पहनेंगी, पीले वस्त्र धारण करके वनों में गायों और ग्वालों के साथ भ्रमण करेंगी परंतु वे मुरलीधर के होठों से लगी बाँसुरी को अपने होठों से नहीं लगाएँगी।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) रसखान ब्रज के गोकुल गाँव में जन्म लेना चाहते हैं क्योंकि वे श्री कृष्ण के बाल्यकाल का गाँव था।

   (ख) कवि उस पर्वत का पत्थर बनना चाहता है जिसे श्री कृष्ण ने इंद्र के प्रकोप से बचने के लिए उठाया था।

   (ग) उन सभी स्थानों का श्री कृष्ण के साथ संबंध था इसलिए वे उन्हें देखते रहना चाहते हैं।

   (घ) उस लकुटि और कंबल का संबंध श्री कृष्ण के साथ था। इसलिए कवि उन पर सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार हैं।

2. (क) गोपियाँ सिर पर मोर पंख धारण करेंगी, गुंजों की माला पहनेंगी, पीले वस्त्र धारण करेंगी।

   (ख) यमुना नदी के किनारे पर कदंब के पेड़ की इन शाखाओं पर रसखान पक्षी रूप में अपना बसेरा बनाना चाहेंगे।

   (ग) कवि तीनों लोकों का राज्य, आठ सिद्धियाँ और नौ निधियाँ त्याग देगा।

3. (क) मनुष्य (ख) पशु

   (ग) पत्थर (घ) कंबल

   (ङ) आँखें (च) ग्राम।

4. (क) धारन-डारन (ख) डारौं-बिसारौं
(ग) पहिरौंगी-फिरौंगी (घ) निहारौं-वारौं।

5. पाठ सार देखें।

6. (क) कृष्ण ✓ (ख) मातृभूमि ✓
(ग) गोवर्धन ✓ (घ) यमुना ✓
(ङ) सौतिया डाह के कारण ✓

7. गाँव के ग्वारन, नित नंद, कालिंदी कूल कदंब, नवौ निधि आदि।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

(ख) कवि श्री कृष्ण के भक्त हैं पशु-पक्षी और पहाड़ बनकर श्री कृष्ण के संग रहना चाहते हैं। यह भक्ति का परम रूप है। रसखान की श्री कृष्ण के प्रति आस्था है।

## पाठ 12. काबुलीवाला

◆ **पाठ उद्देश्य**–काबुलीवाला के माध्यम से मानवीय संबंधों को समझाना।

◆ **पाठ सार**–काबुलीवाला काबुल से मेवे, किशमिश, बादाम बेचने कोलकत्ता आता था। बालिका मिनी समझती कि वह बच्चे चुराकर झोले में डाल लेता था। वह उससे डरती थी। एक दिन काबुली ने उसे झोले से बादाम और किशमिश देने चाहे। धीरे-धीरे मिनी का भय दूर हो गया। वह काबुली से खूब बातें करने लगी। दोनों में मज़ाक होने लगे। एक दिन लेखक ने देखा कि रहमत को सिपाही पकड़कर ले जा रहे थे। एक आदमी ने उसके रुपए नहीं दिए थे तो काबुली ने उसे छुरा मार दिया था। उसे लंबी जेल हो गई। मिनी के विवाह का दिन था तो रहमत लेखक से मिलने आया। उसने

मिनी के बारे में पूछा। लेखक उसे टालने लगा। तब रहमत ने जेब से कागज़ निकाला जिस पर उसकी बेटी के छोटे-छोटे हाथों की छाप थी। यह देख लेखक ने दुल्हन के रूप में सजी मिनी को बुलाया। उसे इतनी बड़ी देखकर काबुली हैरान रह गया। लेखक ने उसे कुछ रुपए दिए और अपने देश जाकर बेटी से मिलने के लिए कहा।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) मिनी समझती थी कि काबुली बच्चे चुराता था।
   (ख) मिनी पाँच वर्ष की थी। वह बहुत नटखट थी।
   (ग) अंदर आकर काबुली ने मिनी को बादाम और किशमिश देने चाहे।
   (घ) धीरे-धीरे मिनी और काबुली घुल-मिल गए। दोनों बहुत बातें करने लगे थे।
2. (क) रहमत ने एक आदमी को बहुत पहले चादर बेची थी। उस आदमी ने पैसे देने से मना कर दिया तो रहमत ने उसे छुरा मार दिया। इसलिए सिपाही उसे ले जा रहे थे।
   (ख) रहमत वर्षों बाद जेल से आया और मिनी को दुल्हन के रूप में देखकर सकपका गया।
   (ग) मिनी काबुली की बेटी जितनी थी। वह उसे अपनी बेटी मानकर बादाम और किशमिश देता था।
3. (क) मिनी ने, पिता से (ख) काबुली ने, मिनी से
   (ग) लेखक ने, काबुली से (घ) काबुली ने, लेखक से।
4. (क) कमरे (ख) मुस्कराते
   (ग) बादाम-किशमिश (घ) बेटी।

5. (क) काबुली की झोली में मेवे थे।
   (ख) काबुली ने मुझे सलाम किया।
   (ग) कागज़ मैला–कुचैला था।
   (घ) कागज़ पर कालिख से निशान बने थे।
   (ङ) मिनी दुल्हन की पोशाक में थी।
6. (क) मेवा बेचने वाला ✓ (ख) कई साल की ✓
   (ग) दो सिपाही ✓ (घ) पाँच वर्ष ✓
   (ङ) बादाम ✓
7. विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) छोटे बच्चों में मिनी की भाँति भय होता है कि बच्चे चुराने वालों के पास बड़ा झोला होता है। वे उसमें बच्चे छिपा लेते हैं। उस आयु में मैं भी शायद यही सोचती।

(ख) मिनी लेखक की पाँच वर्ष की बेटी थी। काबुली उसे प्रतिदिन बादाम-किशमिश देने आता था। जिससे दोनों में दोस्ती हो गई।

## पाठ 13. अर्जुन की प्रतिज्ञा

- **पाठ उद्देश्य–**अभिमन्यु-वध और अर्जुन की प्रतिज्ञा से अवगत कराना।
- **पाठ सार–**महाभारत युद्ध में कौरवों ने चक्रव्यूह में अभिमन्यु का वध कर दिया था। पुत्र की हत्या पर अर्जुन ने प्रतिज्ञा की थी कि वह सूर्यास्त से पूर्व जयद्रथ का वध कर देगा अथवा स्वयं आग में जलकर मर जाएगा।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) अपने पुत्र अभिमन्यु के वध से कुपित अर्जुन क्रोधित हो रहा था।

   (ख) अभिमन्यु अर्जुन का पुत्र था। अर्जुन ने सूर्यास्त से पूर्व जयद्रथ को मारने की प्रतिज्ञा की।

   (ग) अर्जुन ने कहा कि वह जयद्रथ को मार देगा अन्यथा स्वयं जलकर मर जाएगा।

   (घ) पुत्र की मृत्यु के कारण अर्जुन शोकग्रस्त था।

2. (क) कौरवों ने चक्रव्यूह की रचना करके वीर अभिमन्यु को मिलकर मार डाला।

   (ख) अर्जुन ने रवि, शशि, अग्नि, धरती और आकाश को साक्षी बनाया।

   (ग) अर्जुन ने कहा था कि यदि वह जयद्रथ का वध न कर सका तो स्वयं जल मरेगा।

3. अर्जुन कहता है कि अभिमन्यु की मृत्यु से उसके हृदय को जो पीड़ा हो रही है, उसके लिए उत्तरदायी जयद्रथ की मृत्यु ही एकमात्र उपाय है। जयद्रथ को सबसे भयंकर धौर नरक में ही जाना पड़ेगा।

4. संसार, प्रतिज्ञा; कथनानुसार यथार्थ मैं; बालक, कपट, हँसते; सत्वर, सागर-मग्न।

5. लगा–जगा　　धार–अंगार

   ज्वाल–तत्काल　　पार्थ–यथार्थ

   अभी–सभी　　मूल–शूल।

6. (क) आग (ख) सूर्य (ग) समुद्र (घ) चाँद (ङ) धरती।

7. सोता हुआ सागर, साक्षी रहे संसार, धन के निधन, दंड और प्रचंड आदि।

## मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) महाभारत का युद्ध पूर्णतया अनीतियों से लड़ा गया। मैं इससे सहमत हूँ। सात-सात महारथियों द्वारा अकेले-निहत्थे अभिमन्यु का वध इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। ऐसे अनेक प्रसंगों से महाभारत भरा पड़ा है।

(ख) अर्जुन ने यह जयद्रथ के लिए कहा है। संसार में मृत्युदंड से बड़ा और कोई दंड नहीं होता इसलिए वह जयद्रथ को यह दंड देना चाहता था।

# पाठ 14. गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर

- **पाठ उद्देश्य**—रवींद्रनाथ टैगोर के जीवन और कृतित्व से अवगत कराना।
- **पाठ सार**—रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता के जोड़ासाँको मौहल्ले में हुआ था। उनके दादा द्वारकानाथ ठाकुर वैभवशाली थे। लोग उन्हें 'राजा द्वारकानाथ' और उनके पिता को 'महर्षि देवेंद्रनाथ' कहते थे। परिवार में वे सबसे छोटे थे। बाल्यकाल में उन्होंने रामायण और किस्से कहानियाँ चाव से सुनीं। वे कुछ समय तक स्कूल गए फिर घर में पढ़ने लगे। उन्होंने अंग्रेज़ी और संस्कृत की शिक्षा पिता से पाई। वे अपने भाई द्वारा संपादित पत्रिका में कविताएँ-कहानियाँ लिखते थे। उन्होंने शांति-निकेतन में स्कूल खोला था। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया। वे श्रेष्ठ साहित्यकार और कुशल वक्ता थे। भारत और बंगलादेश के राष्ट्रगान उनके द्वारा लिखे गए हैं।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म संभ्रांत और धनी परिवार में हुआ था।

   (ख) उन्होंने भारत और बंगलादेश के राष्ट्रगान लिखे।

(ग) रवींद्रनाथ टैगोर की रुचि किस्से-कहानियाँ सुनने में थी।

(घ) उन्हें विद्यालय का जीवन बंदी के समान लगता था।

2. (क) उन पर उनके परिवार का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। उन्होंने पिता से शिक्षा ग्रहण की।

(ख) बड़े भाई से उन्हें साहित्यिक संस्कार मिले।

(ग) वे प्राचीन भारत के तपोवनों और गुरुकुलों की भाँति की शिक्षा-प्रणाली के समर्थक थे। धन से अधिक महत्व उनके शिक्षा सिद्धांतों का लक्ष्य था।

3. (क) राजा ✓ (ख) मेघदूत ✓

(ग) राजा द्वारकानाथ ✓ (घ) टैगोर, स्कूल ✓

(ङ) व्यावहारिक ✓

4. (क) रवींद्रनाथ टैगोर (ख) गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर

(ग) देवेंद्रनाथ (घ) रवींद्रनाथ टैगेर

(ङ) कोलकाता के जोड़ासाँको मौहल्ले में

5. (क) रवींद्रनाथ टैगोर सादगी में विश्वास रखते थे।

(ख) उनके पालन-पोषण में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

(ग) उनकी कल्पनाशीलता ने उन्हें साहित्यकार बनाया।

(घ) नियति ने उन्हें विश्व विख्यात किया।

7. (क) इत (ख) शीलता

(ग) इक (घ) ता

(ङ) इता (च) ता

## मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

1. (क) रवींद्रनाथ टैगोर महान साहित्यकार थे। उन्होंने कविताओं और कहानियों द्वारा विश्वस्तीय पहचान बनाई। उन्हें नोबेल पुरस्कार भी मिला।

(ख) रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी रचनाओं के द्वारा भारतीय संस्कृति को नवरूप में स्थापित किया। वे युगद्रष्टा साहित्यकार और राष्ट्रभक्त थे।

## पाठ 15. सफ़ेद गुड़

- **पाठ उद्देश्य**–गुड़ खाने के माध्यम से बालक की मनोदशा से अवगत कराकर निर्धनता की विवशता से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–एक लड़के ने दुकान पर सफ़ेद गुड़ देखा और खाने को लालायित हो गया। उसके पास गुड़ खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। उसकी माँ अध्यापिका थी। उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। उसकी माँ धार्मिक विचारों की थी। पुत्र भी माँ के साथ पूजा-पाठ करता था। उसका भगवान पर पूर्ण विश्वास था। वे भगवान की पूजा करके उनसे गुड़ खाने की इच्छा व्यक्त की। तभी माँ ने उसे पैसे देकर नमक लाने के लिए कहा। उसने भगवान का धन्यवाद किया और नमक खरीदने चला। रास्ते में वह भगवान से पैसे देने की प्रार्थना करता गया। अचानक उसे अठन्नी मिल गई। उसने दुकानदार को अठन्नी देकर सफ़ेद गुड़ देने के लिए कहा। अठन्नी धनिए के डिब्बे में गिर गई। दुकानदार ने अठन्नी ढूँढ़ी पर उसे उसके स्थान पर चिकना पत्थर मिला। दुकानदार भी हैरान था। लड़के ने जेब से पैसे निकालकर नमक खरीदा। दुकानदार ने उसे थोड़ा-सा गुड़ लेने के लिए कहा। यह रो पड़ा और चल दिया। उसका भगवान पर विश्वास टूट गया।

### पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) लड़का और उसकी माँ

   (ख) उसकी माँ ने

(ग) ईश्वर ने उसकी प्रार्थना सुन ली क्योंकि उसकी माँ ने नमक खरीदने के लिए पैसे दिए।

(घ) लड़का स्वाभिमानी था इसलिए उसने मुफ़्त में मिलने वाला गुड़ नहीं लिया।

2. (ख) लड़के को लगा ईश्वर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करके उस पर कृपा की थी। अठन्नी उस कृपा का परिणाम था।

(ग) माँ बालक को ईश्वर और उसकी कृपा की कहानियाँ सुनाती थी।

3. (क) मैंने गुड़ खाया। (ख) मस्जिद निकट आ गई।

(ग) मंदिर दूर था। (घ) ईश्वर सर्वत्र हैं।

(ङ) ज़मीन गरम थी। (च) माँ की उम्र बड़ी थी।

4. (क) सफ़ेद ✓ (ख) ग्यारह वर्ष ✓

(ग) उसके पास पैसे नहीं थे ✓

(घ) फटे कपड़े ✓

5. (क) शुद्ध, पवित्र, आशुतोष, दिखावटी, सुकुमार।

6. (क) पानी (ख) इच्छा

(ग) एकाध, बटुए, पैसे चुराने

(घ) माँ

7. लड़का स्वाभिमानी था। इसलिए उसने मुफ़्त में मिलने वाला गुड़ नहीं खाया।

## मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) यदि मुझे ईश्वर से माँगने का अवसर मिला तो मैं उससे निर्धनता दूर करने के लिए कहूँगा। निर्धनता मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप होता है। यदि कहानी का

लड़का निर्धन न होता तो वह भी मित्रों के समान सफ़ेद गुड़ खाता।

(ख) मैं भी वही करता जो लड़के ने किया था। किसी से मुफ़्त में मिली वस्तु भीख के समान होती है।

## पाठ 16. कल्पना की उड़ान

- **पाठ उद्‌देश्य**–कल्पना चावला के जीवन और अंतरिक्ष-विज्ञान में उनके योगदान से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–वर्तमान युग की समस्त सुख-सुविधाओं और मानव जीवन के कल्याण में वैज्ञानिकों द्‌वारा किए आविष्कारों का सबसे बड़ा योगदान है। अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला ने अपने कार्यों द्‌वारा प्रत्येक भारतीय को गर्वित किया है। कल्पना चावला का जन्म 17 मार्च 1962 को करनाल में हुआ था। वे सन्‌ 1982 में अंतरिक्ष विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करने अमेरिका गईं और 1988 में नासा से जुड़ गईं। कल्पना चावला का अंतरिक्ष यात्रा करने के लिए, नासा ने 1995 में चयन किया। उन्होंने पहली अंतरिक्ष यात्रा एस. टी. एस. 87 कोलंबिया शटल द्‌वारा की और अंतरिक्ष में 372 घंटे बिताए। 16 जनवरी 2003 को वे पुनः अंतरिक्ष-यात्रा पर गई परंतु उनका स्पेश शटल कोलंबिया यान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और उनका निधन हो गया।

### पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) कल्पना चावला का जन्म करनाल में 17 मार्च 1962 को हुआ था।

   (ख) कल्पना चावला की रुचि बाल्यकाल से खगोलीय वस्तुओं और घटनाओं में थी।

(ग) वे अपने शिक्षकों से खगोलीय घटनाओं के विषय में पूछती थी।

(घ) कल्पना चावला ने अपनी पढ़ाई अमेरिका में की।

2. (क) जो लोग समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए महत्वपूर्ण कार्य करते हैं, लोग उन्हें उनकी मृत्यु के पश्चात् भी स्मरण करते हैं। कल्पना चावला भी ऐसी ही विशिष्ट महिला थीं।

(ख) कल्पना चावला अंतरिक्ष यात्रा करने वाली प्रथम महिला थीं। उनकी इस यात्रा ने प्रत्येक भारतीय के मन-मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ी थी।

(ग) कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में पहली बार जाकर 373 घंटे बिताकर शोधकार्य करके विश्व में प्रत्येक भारतीय को गौरवान्वित कर दिया था।

3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗

(घ) ✗ (ङ) ✗

4. (क) लोरियों (ख) संभावनाओं पर

(ग) ज्योतिष-विद्या, गणना (घ) 1988, अंतरिक्ष

(ङ) गर्व

5. (क) कल्पना चावला ✓ (ख) खगोलीय घटनाओं में ✓

(ग) 372 घंटे ✓ (घ) एस. टी. एस. 87 ✓

6. कल्पना चावला ने अंतरिक्ष विज्ञान में महत्त्वपूर्ण योगदान किया था। वे अंतरिक्ष में 372 घंटे रही थीं और अनेक शोध कार्य किए थे।

7. कल्पना चावला ने अंतरिक्ष विज्ञान की पढ़ाई अमेरिका में की थी।

8. कल्पनाशीलता, वैज्ञानिक, शुष्क, अंतरिक्ष, पृथ्वी।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) कल्पना चावला की रुचि अंतरिक्ष विज्ञान में थी। वे विद्यार्थी जीवन में खगोलीय घटनाओं में जानकारी लेती थी। इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा के लिए वे अमेरिका गई। नासा से जुड़कर उन्होंने अंतरिक्ष में 372 घंटे बिताकर अनेक शोधकार्य किए।

(ख) आधुनिक भारतीय नारी उच्च शिक्षा ग्रहण करके अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य रही हैं। कल्पना चावला इसकी ज्वलंत उदाहरण है। उन्होंने अपने कार्यों द्वारा प्रत्येक भारतीय का सम्मान बढ़ा दिया था।

## पाठ 17. पानी आ गया

- **पाठ उद्देश्य**–जल के महत्व से परिचित कराना।
- **पाठ सार**–इस लघु नाटिका में जल का महत्व दर्शाया गया है। एक गाँव के तालाब का जल सूख गया था। गाँववासी चिंतित थे। लोगों की मान्यता थी कि तालब में से जगमगाती रोशनी दिखाई देती थी। इसका रहस्य जानने के लिए राजा द्वारा घोषणा कराई गई। इरा और दीपंकर इसका पता करने गए। उन्हें तालाब की सीढ़ियों से आता एक वृद्ध पुरुष दिखाई दिया। दोनों ने उससे तालाब के सूखने का कारण पूछा है। वृद्ध ने स्वयं को परी देश का राजपुरोहित बताया। उसने बताया कि लोगों ने रक्त बहाकर देश को मुक्त कराया था। उनके बलिदान से ताल जल से भर गया था। अब लोगों के पाप के कारण पानी सूख गया था। उसने समझाया कि यदि राजा और नेता अपने अधिकार त्याग दें तो पानी फिर आ सकता था। इस विषय पर गाँव में चर्चा हुई। राजा और नेता भी

चर्चा करने लगे। राजा और नेता के जाने के पश्चात् रोशनी हुई। उसमें से परियों की रानी निकली, उसने बताया कि यदि सब लोग दूसरों के हित के लिए सोचने और कार्य करने लगें तो पानी आ जाएगा। गाँववासी उसका पालन करने लगे। ताल पानी से भर गया।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) डोंडी पीटने वाले ने कहा कि ताल में रात को रोशनी निकलती है। कोई साहसी व्यक्ति इसके रहस्य का पता लगाए।
   (ख) वृद्ध पुरुष परी लोक के राजपुरोहित थे।
   (ग) ताल का पानी सूख जाने के कारण नहरें सूख गई थीं।
   (घ) वृद्ध पुरुष ताल में पानी के सूख जाने के कारण प्यासे ही परी लोक लौट गए।
2. (क) राजपुरोहित ने बताया कि स्वतंत्रता के पश्चात् लोग पाप करने लगे जिससे ताल का पानी सूख गया।
   (ख) वृद्ध पुरुष ने उपाय बताया कि यदि राजा और नेता अपना अधिकार छोड़ देंगे तो ताल में पानी भर जाएगा।
   (ग) पानी सिंचाई के काम आता है। पानी के कारण फसलें पैदा होती हैं। कृषि के लिए पानी सबसे उपयोगी और आवश्यक होता है।
3. (क) रास्ता (ख) ज़ुल्म
   (ग) डॉक्टर के पास (घ) घर छोड़
   (ङ) रूप नगर, झुकते।
4. (क) रेलिंग (ख) बिजली
   (ग) लाल (घ) ताल से
   (ङ) इरा और दीपंकर

5. (क) असुंदर (ख) डरपोक
(ग) बंदी (घ) चढ़ना
(ङ) गीला (च) प्रकाश

6. (क) दीपंकर प्रसन्न हो गया।
(ख) यहाँ विदेशी हुकूमत थी।
(ग) सुगंधित बयार बहने लगी।
(घ) विदेशी अधिकार समाप्त हुआ।

7. (क) ✗ (ख) ✗
(ग) ✗ (घ) ✗
(ङ) ✓

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) शासन चलाने के लिए अधिकारों की आवश्यकता होती है। राजा का यह मानना था। वह अधिकार नहीं छोड़ना चाहता था। राजा के इन विचारों से मैं सहमत नहीं हूँ। शासन जनकल्याण के लिए होना चाहिए।

(ख) अज्ञानता के कारण लोग जल के महत्व को नहीं जानते। इसके लिए जन-चेतना जाग्रत करने की आवश्यकता है। लोग तभी जल को व्यर्थ नहीं करेंगे।

# पाठ 18. गणित के जादूगर – रामानुजन्

- **पाठ उद्देश्य**–रामानुजन् के जीवन और कार्यों से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–श्रीनिवास रामानुजन् का जन्म 22 दिसंबर 1887 को चेन्नई के गाँव इरोड में हुआ था। उनके पिता श्रीनिवास आयंगर क्लर्क थे। रामानुजन् विद्यालय से ही गणित में रुचि रखते थे।

वे ग्यारहवीं कक्षा में फ़ेल हो गए थे। विवाह के पश्चात् नौकरी न मिलने के कारण परेशान रहे। वी. रामास्वामी अय्यर ने उन्हें छात्रवृत्ति दिलवाई। फिर उन्हें क्लर्क की नौकरी मिल गई। वे गणित के नए-नए सूत्र खोजकर देर रात सोते थे। उन्हें इंडियन मैथमेटिकल सोसाइटी के कारण गणितज्ञ की पहचान मिली। गणितज्ञ जी.एस. हार्डी ने उन्हें कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में प्रवेश दिलाया और वे वहाँ से स्नातक हुए। वे ट्रिनिटी कॉलेज की फ़ैलोशिप पाने वाले पहली भारतीय थे। अस्वस्थता के कारण वे भारत लौटे और 26 अप्रैल 1920 को उनका निधन हो गया। उनके जन्म-दिन को 'राष्ट्रीय गणित दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) श्रीनिवास रामानुजन्।
   (ख) रामानुजन् का जन्म 22 दिसंबर 1887 को चेन्नई के इरोड गाँव में हुआ था।
   (ग) रामानुजन्।
   (घ) वे क्लर्क थे।
2. (क) गणित के क्षेत्र में नए-नए फ़ार्मूलों का आविष्कार करने के कारण वे प्रसिद्ध हुए।
   (ख) रामानुजन् अन्य विषयों पर ध्यान नहीं देते थे। इसलिए उनकी मुश्किलें बढ़ी थीं।
   (ग) रामानुजन् को ईश्वर और गणित पर अटूट विश्वास था।
3. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗
   (घ) ✗ (ङ) ✓
4. (क) संस्थापक (ख) फ़ार्मूलों
   (ग) स्पष्टीकरण (घ) रामानुजन्
   (ङ) स्वास्थ्य

5. (क) सभी विषयों में अच्छे ✓

(ख) पाँच रुपए ✓

(ग) गणित के बहुत बड़े विद्वान ✓

(घ) 26 अप्रैल 1920 ✓

6. गणितज्ञ, सूत्रों, समझ। विश्वप्रसिद्ध, रामनुजन्, प्रतिभा।

7. रामानुजन् ने गणित के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। इसलिए उनकी स्मृति में 'राष्ट्रीय गणित दिवस' मनाया जाता है।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) जी. एन. हार्डी ने रामानुजन् को 100 प्रतिशत अंक दिए थे। रामानुजन् को यह अंक उनकी अद्भुत प्रतिभा के लिए दिए गए थे। मुझे भी गणित में अनेक बार सौ प्रतिशत अंक मिले हैं। सौ प्रतिशत अंक पाकर अपार प्रसन्ता होती है।

(ख) मेरी गणित विषय में गहरी रुचि है। इसलिए मैं इसमें अन्य विषयों की अपेक्षा अच्छे अंक लाती हूँ।

## पाठ 19. दक्षिण भारत की गंगा : कावेरी नदी

- **पाठ उद्देश्य**—कावेरी नदी के महत्व से अवगत कराना।
- **पाठ सार**—सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास में नदियों की अहम भूमिका होती है। उत्तर भारत की गंगा के समान दक्षिण भारत की कावेरी नदी को पवित्र और माँ समान माना जाता है। पश्चिमी घाट के ब्रह्मगिरी पर्वत से निकलकर कावेरी नदी 772 किलोमीटर की यात्रा पूर्ण करके बंगाल की खाड़ी में समा जाती है। इसमें कई छोटी-छोटी नदियाँ मिलती हैं। इसके तट पर अनेक ऐतिहासिक मंदिर हैं। यह कर्नाटक और तमिलनाडु से होकर बहती

है। तमिलनाडु में इसे ‘कावेरी’ अर्थात् ‘उपवनों को विस्तार देने वाली’ कहा जाता है। संक्रांति के अवसर पर इसके उद्गम स्थल ‘कावेरी कुंड’ पर मेला लगता है। इसके जल वितरण पर कर्नाटक और तमिलनाडु राज्यों में विवाद चल रहा है।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) विश्व की सभ्यताओं का विकास नदियों के तटों पर हुआ है। नदियों से पीने और सिंचाई के लिए जल मिलता है। ये यातायात की साधन होती थीं।

   (ख) हेमावती, भवानी, अमरावती, काबिनी, शिम्सा आदि।

   (ग) कावेरी नदी का जल कनार्टक और तमिलनाडु राज्यों के लिए सिंचाई और पीने के काम आता है। इसके तटों के आसपास अनेक वन-उपवन हैं। इनके कारण यह हमारे लिए अत्यंत लाभकारी नदी है।

   (घ) तिरुचिरापल्ली कावेरी नदी के तट पर बसा सुप्रसिद्ध नगर है। यह नगर बड़े-बड़े ऐतिहासिक मंदिरों के लिए विख्यात है। यहाँ अनेक उपयोगी वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं। यह प्राकृतिक संसाधनों से पूर्ण है।

2. (क) कावेरी नदी दक्षिण भारत के दो राज्यों के लिए सिंचाई, पीने का पानी, वन-उपवन, वनस्पतियों और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए अत्यंत उपयोगी और लाभकारी है। यह भारत के लिए वरदान है।

   (ख) तमिलनाडु और कर्नाटक राज्यों में कावेरी नदी के जल वितरण को लेकर विवाद है जो सर्वोच्च न्यायालय तक पहुँच चुका है। इसीलिए यह विवाद चिंता का विषय है।

   (ग) पुराणों में लिखा है कि कावेरी नदी का जन्म संक्रांति के दिन हुआ था।

3. (क) ब्रह्म गिरी ✓
   (ख) कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच ✓
   (ग) कावेरी ✓
   (घ) कावेरी ✓
   (ङ) बंगाल की खाड़ी में ✓
4. (क) कावेरी (ख) मर्यादा-पुरुषोत्तम, वनवास, नदी
   (ग) कावेरी, गंगा (घ) निर्झर
   (ङ) कावेरी, संक्रांति
5. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓
   (घ) ✗
6. (क) गोदावरि (ख) दछिन
   (ग) प्रक्ष्यछ (घ) कनार्टक
   (ङ) उदग्म
7. श्रवण कुमार अंधे माता-पिता के लिए नदी में जल लेने गया। तो नदी से आवाज़ आई। राजा दशरथ ने पशु समझकर उसे बाण मारा। श्रवण के पास जाकर दशरथ को अपनी भूल पता चली। श्रवण ने अपनी कथा सुनाई। दशरथ उसके माता-पिता के लिए जल लेकर गए। पुत्र की मृत्यु का समाचार जानकर उन्होंने दशरथ को पुत्र शोक से मृत्यु का शाप दिया। इसी के कारण श्री राम वन गए और दशरथ की मृत्यु हुई।

## मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) नदियों का जल सिंचाई करके फसल उगाता है। हम उस अन्न को खाते हैं। वृक्षों के फल खाते हैं। साग-सब्ज़ियाँ खाते हैं। पानी पीते हैं। इस प्रकार नदियाँ हमारी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।

(ख) नदियाँ माँ के समान हमारा पालन-पोषण करती हैं। इसलिए हम उन्हें माँ कहते हैं।

## पाठ 20. पी. टी. उषा

- **पाठ उद्देश्य**—उड़नपरी पी. टी. उषा के जीवन और उपलब्धियों से अवगत कराना।
- **पाठ सार**—पिताउल्लाकांडी थेक्केपरांबिल उषा का जन्म 27 जून 1964 को कोझिकोड ज़िले के पय्योली गाँव में श्रीमती टी. वी. लक्ष्मी और ई. पी. एम. पैंतल के यहाँ हुआ। सन् 1976 में उनका चयन चालीस खिलाड़ियों में हुआ, वे तब बारह वर्ष की थीं। उन्होंने सोलह वर्ष की आयु में 'पाकिस्तान ओपन नेशनल' में चार स्वर्ण पदक जीते। सन् 1984 में लॉस एंजिल्स ओलंपिक में 400 मीटर की दौड़ में 1/100 सेकंड के अंतर से ब्रांज़ मेडल न जीत सकीं। सन् 1990 के बीजिंग एशियन गेम्ज़ के पश्चात् उन्होंने एथलेटिक्स से संन्यास लिया और 1998 में खेलों में वापिसी की और 'एशियन ट्रेड फ़ेडरेशन मीट' में ब्राँज मेडल जीते। उनकी आत्मकथा 'गोल्डन गर्ल' सन् 1978 में प्रकाशित हुई। उन्हें 1984 में अर्जुन पुरस्कार और 1985 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

### पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) पी. टी. उषा का जन्म 27 जून 1964 को कोझिकोड के पय्योली गाँव में हुआ।

(ख) पिलाउल्लाकांडी थेक्केपरांबिल उषा।

(ग) 34 वर्ष की उम्र में पुनः खेल जीवन में आने के उनके निर्णय ने सबको चौंका दिया।

(घ) उन्होंने 'पाकिस्तान ओपन नेशनल मीट' में चार स्वर्ण

पदक जीते। उन्हें 34 वर्ष की उम्र में नए नेशनल रिकार्ड बनाए। उन्हें अर्जुन पुरस्कार और पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

2. (क) पी. टी. उषा ने कन्नूर के महिला खेल केंद्र से खेल जीवन आरंभ किया।

   (ख) भारत सरकार ने उन्हें अर्जुन पुरस्कार और पद्मश्री से सम्मानित किया।

   (ग) पी. टी. उषा ने देश-विदेश में आयोजित प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक, ब्राँज पदक जीते, अनेक राष्ट्रीय खेल रिकार्ड बनाए और सम्मान प्राप्त किए। वे महान खिलाड़ी हैं।

3. (क) पिलाउल्लाकांडी थेक्केपरांबिल उषा ✓

   (ख) गोल्डन गर्ल ✓ (ग) एथलीट ✓

   (घ) उज्ज्वल ✓ (ङ) 1990 ✓

4. (क) 1976 (ख) 1984

   (ग) 1990 (घ) 1998

   (ङ) 1987 (च) 1984

   (छ) 1985

5. **मूल शब्द**—असफल, समर्पण, सराहना, अविस्मरण, समाज, मानसिक।

   **प्रत्यय**—ता, इत, ईय, ईय, इक, ता।

6. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗

   (घ) ✗

7. (क) पी. टी. उषा में आत्मविश्वास था।

   (ख) उन्होंने कन्नूर में प्रशिक्षण लिया।

(ग) पी. टी. उषा ने ओलंपिक खेलों में भाग लिया।

(घ) उन्होंने देश को गौरवान्वित किया।

**मूल्याधारित प्रश्नोत्तर**

(क) नारी सशक्तिकरण की दृष्टि से पी. टी. उषा लड़कियों की प्रेरणास्रोत हैं। उनका जीवन बालिकाओं और युवतियों को अपने-अपने क्षेत्रों में आगे बढ़ने और शिखरों को छूने की प्रेरणा देने का आदर्श है।

(ख) मैं इस बात से पूर्णतया सहमत हूँ। पी. टी. उषा ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जगत में ऐतिहासिक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं।

# पाठ 22. यात्रा वृतांत (केवल पढ़ने के लिए)

# पाठ 23. श्री राम–कैकेयी संवाद

- **पाठ उद्‌देश्य**–राम वनवास और कैकेयी के पश्चाताप से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–राम के वनवास में रहते समय भरत और माताएँ उनसे मिलने आती हैं। राम के द्‌वारा आने का कारण पूछने पर भरत कहता है कि मैं अपनी दशा कैसे बताऊँ? मेरे कारण पिता ने शरीर त्याग दिया, आप वनों में रहने आ गए। मेरी माता ने ही मुझे अभिशापित बना दिया। तभी कैकेयी ने राम से कहा कि अब घर लौट चलो। मैं भरत को जान न सकी। मैं तुम्हारी माँ तुम्हारी अपराधिन हूँ। तुम्हें वनवास भेजने में भरत का हाथ नहीं है। मंथरा ने कुछ नहीं किया मुझमें स्वयं पर विश्वास न था। कहा जाता था कि माता कुमाता नहीं होती, मैंने उसे झुठला दिया है। युगों तक

मेरी भर्त्सना की जाती रहेगी। मुझे महास्वार्थ ने घेर लिया था। श्री राम कहते हैं हे माँ, तुम धन्य हो जिसने भरत जैसे मेरे भाई को जन्म दिया है।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) मंडप में एकत्रित सभा में लोग श्री राम से अनुरोध करने आए थे कि वे घर लौट चलें।
   (ख) कैकेयी
   (ग) कैकेयी ने राम को वनवास देने में स्वयं को दोषी मानकर उन्हें घर लौटने के लिए कहा तो लोग विस्मित रह गए।
   (घ) कविता में कैकेयी को अपने किए पर पश्चाताप करने की व्यथा भोगते हुए दर्शाया गया है।
2. (क) कैकेयी श्री राम से प्रार्थना करती है कि वे घर लौट चलें।
   (ख) कैकेयी अपने किए पाप के समक्ष विवश-सी दिखाई देती है। उसके कारण दशरथ का निधन हो गया, पुत्र भरत उससे विमुख हो गया और राम वन में आ गए। वह विवश कुछ नहीं कर पा रही थी।
   (ग) कैकेयी कहती है कि मंथरा का दोष नहीं है, मेरे मन में स्वयं पर विश्वास नहीं था।
3. अभीप्सित; सजग, सपना। भरत अभीप्सित। तरु तले, बसेरा, अभीप्सित।
4. (क) अ (ख) अप
   (ग) उत् (घ) स
   (ङ) अ (च) स
5. करुण रस।

6. देखें पाठ सार।
7. कैकेयी ने स्वयं को अभागी इसलिए कहा है क्योंकि उसके कारण राम को वनवास मिला था। वह कहती है कि आने वाले युगों तक यही कहा जाएगा कि महलों में एक अभागी रानी रहती थी जिसने रघुकुल को कलंकित कर दिया।
8. देखें पाठ सार।
9. अनुप्रास अलंकार।
10. पाठ सार देखें।
11. देखें उत्तर 7, 2 (ख), (ग)।

12 और 13 विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

## पाठ 23. विनय के पद–तुलसीदास

◆ **पाठ उद्देश्य–**विनय के पदों द्वारा तुलसीदास के श्री राम के प्रति भक्ति भाव से अवगत कराना।

◆ **पाठ का सार–**1. संसार में ऐसा उदार कौन है जो सेवा कराए बिना ही दीन-दुखियों पर कृपा करता है? श्री राम ही ऐसे हैं। उनके जैसा कोई अन्य नहीं है। बड़े-बड़े ज्ञानी योग और वैराग्य करके जिस परम गति को नहीं पाते, वह श्री राम ने शबरी और जटायु को दे दी। जिस संपत्ति को रावण ने शिव पर अपने दस सिर देकर प्राप्त किया था, श्री राम ने वह संपत्ति विभीषण को दे दी। तुलसीदास कहते हैं कि हे मन, यदि तुम संपूर्ण सुख चाहते हो तो श्री राम को स्मरण किया करो। प्रभु कृपानिधान हैं, वे सब इच्छाएँ पूरी कर देंगे।

2. श्री राम और सीता जिन्हें प्रिय नहीं लगते, वे लोग जितने भी निकट के प्रेमीजन हों उनका त्याग कर देना चाहिए। प्रह्लाद ने

पिता को त्यागा, विभीषण ने भाई रावण को त्यागा, भरत ने माता से मुँह मोड़ लिया, राजा बलि ने गुरु शुक्राचार्य को त्यागा, ब्रज की गोपियों ने अपने पतियों को त्यागा। ये सभी सुखों को प्राप्त करके पूज्य हो गए। उस अंजन के आँखों में लगाने का क्या लाभ जिससे आँखें खराब हो जाएँ। यदि अपने प्रिय जन ही प्रभु श्री राम और सीता से अलग करने लगें तो उनको त्याग दें और प्रभु से प्रेम करें। तुलसी कहते हैं वही हमारे परम हितकारी हैं, प्राणों से प्रिय हैं जिनके संग रहने से श्री राम के चरणों की ओर ध्यान लगता है।

## पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) इन पदों में श्री राम की महिमा का वर्णन किया गया है क्योंकि तुलसीदास की श्री राम में आस्था और भक्ति थी।
   (ख) श्री राम ने जटायु और शबरी को परम गति प्रदान की थी।
   (ग) जिनके साथ रहने से श्री राम और सीता जी के प्रति भक्ति न रहे, उनका त्याग कर देना चाहिए।
   (घ) श्री राम जैसा कृपालु और कोई नहीं है क्योंकि वे बिना सेवा कराए ही दीनों पर दया करते हैं।
2. (क) जब विभीषण रावण को त्यागकर श्री राम की शरण में आए उन्होंने विभीषण को उसी समय लंका के राजा के रूप में संबोधित किया था। उन्होंने ऐसा इसलिए किया था क्योंकि विभीषण उनकी शरण में आया था।
   (ख) ऐसा अंजन बेकार होता है।
   (ग) तुलसीदास के इष्टदेव श्री राम थे। वे उनके परम भक्त थे। इसलिए उन्होंने श्री राम का गुणगान किया है।
3. (क) गीध जटायु था, जिसने सीता का अपहरण करके ले जा रहे रावण से लड़ाई की थी।

(ख) शबरी मतंग ऋषि के आश्रम में रहती थी। वे श्री राम की परम भक्तिन थी। श्री राम के आगमन पर उसने चख-चखकर श्री राम को मीठे बेर खिलाए थे।

(ग) लंका के राजा रावण का भाई युद्ध से पूर्व श्री राम की शरण में आया था। युद्ध के पश्चात वह लंका का राजा बना।

(घ) प्रह्लाद हिरणकश्यप का पुत्र था जो भगवान विष्णु का उपासक था। पिता ने उसे मारना चाहा पर ऐसा न कर सका।

4. (क) वैराग्य (ख) कार्य
(ग) प्राण (घ) यद्यपि
(ङ) शिव (च) शीश

5. (क) जितनी संगति से प्रभु श्री राम के चरणों में भक्ति भाव बढ़े उनकी संगति करनी चाहिए। तुलसीदास कहते हैं कि यह उनका विचार है।

6. रावण लंका का राजा था। भगवान शंकर की पूजा करके वरदान में उसे लंका मिली थी।

7. अनुप्रास अलंकार।

## मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) भगवान के चरणों में ध्यान लगाकर समस्त सुख प्राप्त किए जा सकते हैं।

(ख) मैं तुलसीदास के इन विचारों से पूर्णतया सहमत हूँ।

# पाठ 24. शीर्षासन

**पाठ उद्देश्य**–शीर्षासन से अवगत करना।

**पाठ सार**–शीर्षासन का सार पुस्तक में ही हैं देखें।

**पाठ मूल्यांकन उत्तर**

1. (क) योग द्वारा तन और मन स्वस्थ रहते हैं।

   (ख) शीर्षासन करने से रक्त बढ़ता है। यह मस्तिष्क के लिए लाभदायक है, जिससे बाल नहीं झड़ते, एकाग्रता बढ़ती है।

   (ग) शीर्षासन।

   (घ) शीर्षासन।